Date:
Page No. 4

⇒ अथर्ववेद की शाखाएँ :⇒ पतञ्जलि ने महाभाष्य में "नवधाऽथर्वणो वेदः" कह कर इस वेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया गया, चरणव्यूह तथा व्याकरणभाष्य की भूमिका में भी अथर्ववेद की नौ ही शाखाएँ कही गई है, किन्तु नामों में भिन्नता है। ये नाम इस प्रकार है —

(1) पैप्पलाद
(2) तौद
(3) मौद
(4) शौनकीय
(5) जाजल
(6) जलद
(7) ब्रह्मवद
(8) चारणवैद्य।

इन नौ शाखाओं में से सात शाखाओं का तो नाममात्र ही अवशिष्ट रहा है, केवल पैप्पलाद एवं शौनकीय शाखा के ही शुद्ध ग्रन्थ प्राप्त होते है।

⇒ 1. पैप्पलाद शाखा :⇒ पिप्पलाद ऋषि के नाम पर इस शाखा का नामकरण हुआ। प्राचीनकाल में इस शाखा की बहुत ख्याति थी। इस शाखा की एकमात्र प्रति काश्मीर में शारदा लिपि में प्राप्त हुई थी। तत्कालीन काश्मीर नरेश ने 1875 ई. में वह प्रति प्रसिद्ध जर्मन विद्वान डॉ. रॉथ को उपहार रूप में भेज दी। 1960 ई. में अमेरिका में उसकी फोटोस्टेट प्रति छपी। बाद में डॉ. रघुवीर ने भी उसका एक सुन्दर संस्करण प्रकाशित कराया। पतञ्जलि के प्रमाण से यह स्पष्ट है कि महाभाष्य काल में अथर्ववेद की यही शाखा सर्वाधिक प्रचलित थी।

Scanned with CamScanner

Date:
Page No. 5

=> 2. गौनकीय शाखा :=> आजकल प्रचलित अथर्ववेद संहिता इसी गौनकीय शाखा की है। प्रसिद्ध गोपथ ब्राह्मण इसी शाखा से सम्बद्ध है, इस संहिता में 20 काण्ड, 731 सूक्त तथा 5987 मन्त्र है। वर्तमान युग में उपलब्ध पैप्पलाद एवं गौनक शाखाओं में पर्याप्त अन्तर है। पैप्पलाद शाखा में गद्यभाग भी अधिक है और अभिचार मन्त्र भी अधिक है। दोनों का प्रारम्भिक मंत्र भी भिन्न - भिन्न है। गोपथ ब्राह्मण और महाभाष्य में "शन्नो देवीरभिष्टये" अथर्ववेद का प्रथम मन्त्र कही है, किन्तु गौनक शाखा में "ये त्रिषप्ता परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रत" — यह मन्त्र प्रथम उल्लिखित है। इस दृष्टि से पैप्पलाद शाखा की अथर्ववेद संहिता प्राचीनतर जान पड़ती है। किन्तु वह सम्पूर्ण रूप में सर्वसुलभ नहीं है। सम्प्रति गौनक शाखा की संहिता का ही प्रचार है।

Scanned with CamScanner